MASTER OF ARTS

IN

JAINOLOGY & PRAKRIT SAHITYA

Syllabus

(Yearly Examination scheme)

M. A. Previous-2012-13,

M. A. Final- 2013-14 Onward

FACULTY OF HUMANITIES

MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSTIY

UDAIPUR

MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSTIY: UDAIPUR

MASTER OF ARTS IN JAINOLOGY & PRAKRIT SAHITYA

M. A. Previous-2012-13,

M. A. Final- 2013-14

1. **Duratation of the Course:** The Master of Arts (Jainology and Prakrit Sahitya) course will be of four semester duration to be conducted in two years. Each year will be of approximately 10 months (minimum 180 working days in a year) duration.

2. **Eligibility:** Candidates seeking admission to the First Year of Master of Arts in Jainology and Prakrit Sahitya must have a B.A. or an equivalent degree with 48% marks. Candidates who have studied Jainology and Prakrit Sahitya honors at B.A. level will be preferred.

3. **Admission:** Admission will be made on the basis of the fifty percent weightage to the marks obtained in the entrance examination conducted by the Department and fifty percent weightage to total marks obtained at the senior secondary and graduation level. The entrance examination shall be of multiple choice nature. It will be of 2 hrs. duration and will carry 100 marks. There will be total 100 questions of objective type. (Each correct answer carrying 1 marks).

4. **Seats: 40**

5. **Course Structue: M.A. First Year, Jainology & Prakrit Sahitya**

M.A.Previous Year : Jainology & Prakrat Sahitya

Paper No.	Paper Code	Paper Name	L-T-P	Ext.	Avarege	Total
I	4541	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा		75	25	100
II	4542	प्रहसन, सट्टक एवं पालि		75	25	100
III	4543	अर्द्धमागधी एवं प्राकृत–अपभ्रंश कवि		75	25	100
IV	4544	शौरसेनी एवं महाराष्ट्री प्राकृत		75	25	100
				300	**100**	**400**

M.A.Final Year : Jainology & Prakrat Sahitya						
Paper No.	**Paper Code**	**Paper Name**	**L-T-P**	**Ext.**	**Avarege**	**Total**
V	5541	पाण्डुलिपि–सम्पादन, छन्द एवं शिलालेख		75	25	100
VI	5542	प्राकृत, अपभ्रंश व्याकरण एवं भाषा–विज्ञान		75	25	100
VII	5543	जैन आगम, ध्यान एवं योग		75	25	100
VIII	5544	जैनविद्या, सिद्धान्त एवं दर्शन		75	25	100
				300	**100**	**400**
		Grand Total (Previous & Final)		**600**	**200**	**800**

एम. ए. : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

(सामान्य निर्देश)

अ. प्राकृत शिक्षण का माध्यम हिन्दी है। अतः प्रश्न पत्र हिन्दी में पूछे जायेंगे। परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में लिख सकेंगे।

ब. प्रत्येक इकाई में से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

स. प्रश्नों का आन्तरिक विकल्प नई परीक्षा प्रणाली के अनुसार होगा।

द. एम. ए. प्रथम वर्ष में चार पत्र एवं एम.ए. द्वितीय वर्ष में चार पत्र होंगे। एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य में प्रत्येक वर्ष में 75–75 अंकों के 3–3 घंटे के चार–चार प्रश्न–पत्र होंगे।

इ. एम. ए. प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष में 75–75 अंकों के चार–चार प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 25–25 अंकों में से विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्तांक के आधार पर औसत रूप में दिए जायेंगे।

(खण्ड – अ)

इस भाग में 45 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। ये प्रश्न विकल्प सहित होंगे। (45 x1 = 45 अंक)

(खण्ड – ब)

इस भाग में पाँच विवेचनात्मक प्रश्न प्रत्येक इकाई से दिए जायेंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 300–400 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा। (10 x 3 = 30 अंक)

एम. ए. पूवार्द्ध : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रश्नपत्र–प्रथम

कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा

प्रश्नपत्र कोड – 4541

75 अंक

इकाई एक – 15 अंक

1– कुवलयमालाकहा (उद्द्योतनसूरि) – अनुच्छेद 1–12 तक
सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये, प्राकृत विद्या मण्डल, अहमदाबाद

इकाई दो – 15 अंक

2– समराइच्चकहा (प्रथम भव)
सम्पा. डॉ.रमेश चन्द्र जैन, साहित्य भण्डार, कानपुर

इकाई तीन – 15 अंक

आलोचनात्मक अध्ययन एवं समीक्षा

क. पठित ग्रंथों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन

ख. प्राकृत कथा एवं चरित साहित्य की समीक्षा

इकाई चार – 15 अंक

वज्जालग्गं की 20 गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्याकन एवं अनुवाद
वज्जालग्गं में जीवन मूल्य– डॉ. के. सी. सोगानी – गाथा 1 से 20

इकाई पाँच – 15 अंक

परम्परा एवं रचना अभ्यास

1. जैन धर्म एवं प्राकृत की परम्परा का परिचय –7.5 अंक
(जैन धर्म एवं प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान)

2. प्राकृत रचना सौरभ (डॉ. के. सी. सोगानी) के पाठ 1 से 61 का अभ्यास
(किन्ही पाँच वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद पूछना) –7.5 अंक

सहायक पुस्तकें :–

1. कुवलयमाला भाग–2, सम्पा. डॉ. ए. एन.उपाध्ये
2. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
3. समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. झिनकू यादव
4. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक अनुशीलन – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
5. प्राकृत का जैन कथा साहित्य – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन
6. बृहत्कथाकोश – डॉ. ए. एन.उपाध्ये (भूमिका)
7. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
8. प्राकृत स्वयं शिक्षक – डॉ. प्रेम सुमन जैन
9. प्राकृत रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी
10. समराइच्चकहा (प्रथम भव) सम्पा. डॉ.रमेश चन्द्र जैन, साहित्य भण्डार, कानपुर
11. वज्जालग्गं में जीवन मूल्य– डॉ. के. सी. सोगानी

प्रश्नपत्र–द्वितीय

प्रहसन, सट्टक एवं पालि

प्रश्नपत्र कोड – 4542

75 अंक

इकाई एक – 15 अंक

मृच्छकटिकं – महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6, एवं 8 वाँ
(प्राकृत अंश मात्र)

इकाई दो – 15 अंक

कर्पूरमंजरी – राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य)
सम्पादक डॉ. रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974

इकाई तीन – 15 अंक

प्राकृत प्रयोग एवं पालि

1. संस्कृत नाटकों के प्राकृत अंशों का भाषागत परिचय – 7.5 अंक
(प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमलचन्द्र जैन, में संकलित नाटकों के प्राकृत अंश)
2 धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग) – 7.5 अंक

इकाई चार – 15 अंक

सट्टक साहित्य एवं पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन एवं चरित्र–चित्रण

इकाई पाँच – 15 अंक

भाषागत विवेचन

1. पठित ग्रन्थों का भाषागत विवेचन एवं मागधी प्राकृत की प्रमुख विशेषताएँ –7.5 अंक
2. हेमशब्दानुशासन के चतुर्थपाद के सूत्र नं. 287–302
(प्राकृत प्रवेशिका के मागधी सूत्र) – 7.5 अंक

नोट :– छः सूत्रों को देकर तीन सूत्रों के सोदाहरण अर्थ पूछना आवश्यक है।

सहायक पुस्तकें :–

1. महाकवि शूद्रक – डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी
2. इन्ट्रोडक्शन, स्टडी आफ मृच्छकटिकम् – डॉ. जी. वी. देवस्थली
3. कर्पूरमंजरी, स्टेनकोनो (भूमिका)
4. आचार्य राजशेखर – डॉ. श्याम वर्मा
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र
6. हेमशब्दानुशासन (हिन्दी व्याख्या) – श्री प्यारचन्द जी महाराज
7. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
8. प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द जैन
9. पालि साहित्य का इतिहास – भरत सिंह उपाध्याय
10. मृच्छकटिकं – महाकवि शूद्रक
11. कर्पूरमंजरी – राजशेखर, सम्पादक डॉ. रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974
12. प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमलचन्द्र जैन
13. धम्मपद

प्रश्नपत्र–तृतीय

अर्धमागधी एवं प्राकृत – अपभ्रंश कवि

प्रश्नपत्र कोड – 4543

75 अंक

इकाई एक– 15 अंक

आचारांगसूत्र (प्रथम श्रुत–स्कन्ध) –7.5+7.5 अंक

नवां अध्ययन उपधान सूत्र की व्याख्या एवं प्रथम एवं द्वितीय अध्ययन की समीक्षा

इकाई दो – 15 अंक

उत्तराध्ययन सूत्र–
1. विनय अध्ययन (1 से 48 गाथाएँ)
2. नमिप्रवज्या (1 से 62 गाथाएँ)
3. केशी गौतम अध्ययन का मूल्याकन

इकाई तीन – 15 अंक

आगम कथा ग्रन्थ एवं सर्वेक्षण

1. नायाधम्मकहा– पांचवा थावच्चापुत अध्ययन एवं सातवां रोहिणी अध्ययन –7.5 अंक
2. अर्धमागधी आगम साहित्य का सर्वेक्षण –7.5 अंक

इकाई चार 15अंक

अर्धमागधी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचना, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण

अभिनव प्राकृत– व्याकरण पृष्ठ 409 से 430 के सम्बन्धित अंश

इकाई पाँच – 15 अंक

प्राकृत एवं अपभ्रंश के प्रमुख कवि – 7.5+7.5 अंक

क. महाकवि हाल, विमलसूरि, संघदासगणि, शिवार्य, आचार्य जिनदत्तसूरि, नेमिचन्द सिद्धान्तचक्रवर्ति , देवेन्द्रगणि।

ख. स्वयम्भू, पुष्पदन्त, वीरकवि धनपाल, रइधू आदि के योगदान एवं उनके ग्रन्थों पर सामान्य प्रश्न।

सहायक पुस्तकें :–

1. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीशचन्द जैन
2. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास – भाग 1
3. उत्तराध्ययन – एक समीक्षात्मक अध्ययन – आचार्य तुलसी
4. प्राकृत काव्य सौरभ (1975) – डॉ. प्रेम सुमन जैन
5. आगमयुग का जैन दर्शन – पं. दलसुख मालवणिया
6. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – देवेन्द्र मुनि शास्त्री
7. आयारो – जैन विश्व भारती, लाडनूँ (राज)
8. उत्तराध्ययनसूत्र, तेरापंथ महासभा, कलकत्ता
9. भविसयत्तकहा एवं अन्य अपभ्रंश कथा काव्य – डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री
10. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
11. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी – डॉ. घाटगे

12. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, तृतीय खण्ड – डॉ. पिशेल
13. अपभ्रंश भाषा और साहित्य – डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन
14. मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन –डॉ. फूलचन्द प्रेमी
15. रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन – डॉ. राजाराम जैन
16. नायाधम्मकहा– आचार्य तुलसी एवं मुनि नथमल
17. आचारांगसूत्र (भाष्य सहित) – आचार्य तुलसी एवं मुनि नथमल
18. अभिनव प्राकृत –डॉ. नेमिचन्द शास्त्री

प्रश्नपत्र–चतुर्थ

शौरसेनी एवं महाराष्ट्री

प्रश्नपत्र कोड – 4544

75 अंक

(क) शौरसेनी

इकाई एक – 15 अंक

प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) – आचार्य कुन्दकुन्द –गाथा 1–92 अनुवाद एवं समीक्षा

इकाई दो – 15 अंक

व्याख्या एवं समीक्षा

1. द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्राचार्य) – 7.5 अंक
2. भगवती आराधना – शिवार्य, 1354–1433 गाथाएँ – 7.5 अंक

इकाई तीन – 15 अंक

शौरसेनी आगम सर्वेक्षण एवं भाषागत विवेचन

1. शौरसेनी आगम साहित्य का सर्वेक्षण – 7.5 अंक
2. शौरसेनी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन –7.5 अंक
   (अभिनव प्राकृत व्याकरण अध्ययन 10 पृष्ठ 383–99 तक)

(ब) महाराष्ट्री

इकाई चार – 15 अंक

आख्यानकमणिकोश (आम्रदेवसूरिवृत्ति)

तीसरा अधिकार 15 वीं कथा रोहिण्याख्यानकम् (संदर्भ ग्रंथ – रोहिणीकहा (गाथा 1 से 100 तक)
सम्पा. डॉ. प्रेम सुमन जैन, साहित्य संस्थान, उदयपुर , 1986

अनुवाद एवं ग्रन्थ समीक्षा

इकाई पाँच – 15 अंक

गउडवहो (वाक्पतिराज) सं – एन. जी. सुरू
गाथा संख्या 62–64, 68, 70–73, 75–71, 850–60, 862–67, 871–885,
887, 892–897, 900, 902–3, 905–908 कुल 50 गाथाएं
सन्दर्भ पुस्तिका : वाक्पतिराज की लोकानुभुति, गाथाएं 1– 50
संकलन – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर – 1983 (व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)

सहायक पुस्तकें :–

1. प्रवचनसार , सम्पा. डॉ. एन. एन. उपाध्ये
2. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र
3. भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन
4. भगवती आराधना (शिवार्य) भाग 2 सं – पं. के. सी. शास्त्री, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, 1978
5. महावीर और उनकी आचार्य–परम्परा, भाग 2 डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
6. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
7. शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण–डॉ. प्रेम सुमन जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2001
8. द्रव्यसंग्रह –नेमिचन्द्राचार्य

9. रोहिण्याख्यानकम– सम्पा. डॉ. प्रेम सुमन जैन, साहित्य संस्थान, उदयपुर , 1986
10. गउडवहो (वाक्पतिराज) सं – एन. जी. सुरू
11. वाक्पतिराज की लोकानुभुति–संकलन – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर – 1983

एम. ए. उत्तरार्द्ध : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रश्नपत्र–पंचम

पाण्डुलिपि–सम्पादन, छन्द एवं शिलालेख

प्रश्नपत्र कोड – 5541

75 अंक

इकाई एक – 15 अंक

पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त –

1. पाण्डुलिपि विज्ञान का स्वरूप एवं महत्त्व
2. पाण्डुलिपि की रचना – प्रक्रिया एवं चिह्न
3. प्राप्ति – विवरण, बाह्य एवं अंतरंग परिचय
4. लिपि के प्रकार (ब्राह्मी, देवनागरी आदि)

इकाई दो – 15 अंक

पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त –

1. वर्ण–विकार एवं शब्द अर्थ की समस्या
2. पाठालोचन की प्रमुख प्रणालियां एवं पाठ–निर्माण
3. काल–निर्धारण के प्रमुख आधार
4. प्रमुख ग्रन्थ–भंडारों का परिचय एवं महत्त्व

इकाई तीन – 15 अंक

प्राकृत–अपभ्रंश छन्द एवं लाक्षणिक साहित्य

(क) प्राकृत एवं अपभ्रंश छन्द –7.5 अंक

निम्नलिखित प्राकृत छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण –
गाहा, पथ्या, विपुला, उग्गाहा, गाहू , सिंहणी, गाहिणी, स्कन्दक एवं द्विपदि, कडवक, घत्ता, पज्झडिका, हेला, चाउपइया ।

(ख) प्राकृत का लाक्षणिक साहित्य – 7.5 अंक

छन्द, अलंकार एवं कोश के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय

इकाई चार – 15 अंक

प्राकृत शिलालेख

1. अशोक के 1–8 शिलालेख (गिरनार पाठ) एवं खारवेल के शिलालेख का सटिप्पण अनुवाद – 7.5 अंक
2. प्राकृत के प्रमुख शिलालेखों पर सामान्य प्रश्न – 7.5 अंक

इकाई पाँच – 15 अंक

प्राकृत काव्य साहित्य परिचय एवं व्याख्या

सेतुबन्ध (प्रवरसेन) प्रथम सर्ग (1–40 गाथाएँ) सम्पादक – डॉ. राजाराम जैन

सहायक पुस्तकें :–

1. अशोक – डॉ. भण्डारकर
2. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास– भाग 6, डॉ. गुलाबचन्द चौधरी एवं भाग 5
3. छंदानुशासन – हेमचन्द्र

4. प्राकृत पैंगलम् (सम्बन्धित अंश)
5. पाठालोचन की भूमिका – डॉ. कत्रे
6. पाण्डुलिपि सम्पादनकला –सं –डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
7. पाण्डुलिपि विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र – राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
8. खारवेल शिलालेख – डॉ. शशिकान्त जैन
9. सेतुबन्ध (प्रथमसर्ग) सम्पा. – डॉ. हरिशंकर पाण्डेय
10. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (पृ0 247–296)
11. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास भाग 5, पं. अम्बालाल शाह
12. अशोक के शिलाभिलेख–

प्रश्नपत्र–षष्ठ

प्राकृत, अपभ्रंश व्याकरण एवं भाषा–विज्ञान

प्रश्नपत्र कोड – 5542

75 अंक

इकाई एक – 15 अंक

प्राकृत व्याकरण :– हेम शब्दानुशासन के तृतीय पाद के सूत्र 1–42 सूत्र एवं 58–182 सूत्रों की सोदाहरण हिन्दी व्याख्या–

अ. प्राकृत व्याकरण के शब्दरूप, कारक एवं सर्वनाम से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्रों में से चार सूत्रों को देकर दो की व्याख्या पूछना।

ब. प्राकृत व्याकरण के क्रिया एवं कृदन्त से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्रों में से चार सूत्रों को देकर दो की व्याख्या पूछना।

इकाई दो – 15 अंक

सोदाहरण नियम एवं ग्रन्थ परिचय

क. प्राकृत व्याकरण के अव्यय, सन्धि, समास, विशेषण एवं वाक्य प्रयोग से सम्बन्धित सोदाहरण नियम लिखना – 7.5 अंक

ख. प्राकृत व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का सामान्य परिचय – 7.5 अंक

इकाई तीन – 15 अंक

अपभ्रंश व्याकरण एवं चरित काव्य

क. अपभ्रंश व्याकरण के प्रमुख नियम – 7.5 अंक

ख. णायकुमार चरिउ, संधि–एक, कड़वक 1, 6, 7, 17 – 7.5 अंक

इकाई चार – 15 अंक

भाषा–विज्ञान एवं पालि–प्राकृत– भारतीय आर्य भाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास (वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध)

इकाई पाँच – 15 अंक

ध्वनिपरिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत में लोप, आगम, विपर्यय, ह्रस्वमात्रा नियम, समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति, संधि के सोदाहरण नियम।

सन्दर्भ पुस्तक – प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास–डॉ. नेमिचन्द शास्त्री (अध्याय प्रथम, पृष्ठ 1–23) एवं अध्याय पंचम, पृष्ठ 113–153) का सम्बन्धित अंश का अध्ययन अपेक्षित।

सहायक पुस्तकें :–

1. हेमशब्दानुशासन– (प्यारचन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर
2. हेम प्राकृत व्याकरण– डॉ. उदयचन्द जैन, जयपुर, 1983
3. हेमचन्द का शब्दानुशासन – एक अध्ययन– डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
4. प्राकृतमार्गोपदेशिका– पं. बेचरदास दोशी
5. प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड–1) – डॉ. प्रेम सुमन जैन (तृतीय आवृत्ति)
6. प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण एवं उसके प्राकृत–संस्कृत तत्त्व– डॉ. के. आर. चन्द्रा
7. भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ. भोलाराम तिवारी
8. भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री

9. प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द्र जैन
10. अपभ्रंश काव्यधारा – सम्पा. डॉ. पी. एस. जैन एवं डॉ. के. के. शर्मा,
11. णायकुमार चरिउ – सम्पा. हीरालाल जैन
12. अपभ्रंश रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर
13. अपभ्रंश अभ्यास सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर
14. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
15. शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण–डॉ. प्रेम सुमन जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2001

प्रश्नपत्र–सप्तम

जैन आगम, ध्यान एवं योग

प्रश्नपत्र कोड – 5543

75 अंक

इकाई एक – 15 अंक

अर्धमागधी आगम

1. सूत्रकृतांग (प्रथम समय अध्ययन 83 गाथाएं) – 7.5 अंक
2. उपासगदशांगसूत्र – प्रथम आन्नदश्रावक अध्ययन – 7.5 अंक

इकाई दो – 15 अंक

ज्ञान, ध्यान एवं योग

1. कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामीकार्तिकेय) गाथा 253 से 301 तक (ज्ञानस्वरूप एवं नय वर्णन) सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये
2. जैन ध्यान एवं योग – सिद्धान्त एवं प्रक्रिया

इकाई तीन – 15 अंक

पंचास्तिकाय (कुंदकुंद) द्वितीय अधिकार

(गाथा 105 से 153 नव पदार्थ एवं पुद्गल अस्तिकाय विवेचन)

इकाई चार – 15 अंक

पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई पाँच – 15 अंक

आगम के व्याख्या साहित्य का परिचय एवं महत्व

(निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका एवं शौरसेनी आगम की प्रमुख टीकाएँ)

सहायक पुस्तकें :–

1. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग 1, 2 एवं 3
2. सूत्रकृतांग सूत्र – सं. मुनि मधुकर (हिन्दी व्याख्या सहित)
3. जैन आगम साहित्य – मनन और मीमांसा – देवेन्द्र मुनि शास्त्री
4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन
5. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, भाग 1–2 – डॉ. नेमिचन्द
6. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन
7. आगम युग में जैन दर्शन – पं. दलसुखभाई मालवणिया
8. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन
9. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द जैन 1989
10. प्राकृत गद्य–पद्य बन्ध, भाग 1–2, – प्राकृत शोध संस्थान , वैशाली
11. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन – डॉ. अर्हतदास डिगे
12. जैन साधना पद्धति में ध्यान–योग – डॉ. साध्वी प्रियदर्शना
13. ज्ञानार्णव – एक समीक्षात्मक अध्ययन – दर्शनलता
14. ध्यान : एक दिव्य साधना – शिवमुनि

15. जैन आगमों में भारतीय दर्शन के तत्त्व – डॉ. साध्वी सुप्रभा सुधा
16. पंचास्तिकाय – कुन्कुन्दाचार्य
17. कार्तिकेयानुप्रेक्षा –स्वामीकार्तिकेय – सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये
18. उपासगदशांगसूत्र –– सं. मुनि मधुकर (हिन्दी व्याख्या सहित)
19. परमात्मा प्रकाश एवं योगसार –सम्पा. डॉ. उपाध्ये

प्रश्नपत्र–अष्टम

जैनविद्या, सिद्धान्त एवं दर्शन

प्रश्नपत्र कोड – 5544

75 अंक

इकाई एक – 15 अंक

सम्मइसुत्तं (सिद्धसेन, तीसरा अनेकान्त काण्ड 1–70 गाथाएं) एवं समीक्षा

इकाई दो – 15 अंक

सिद्धान्त प्रतिपादन –

19. समणसुत्तं चयनिका (प्रो. के सी. सोगानी) गाथा 1–60 –7.5 अंक
20. दशवैकालिकसूत्र (1 से 4 अध्ययन) – –7.5 अंक

इकाई तीन – 15 अंक

जैन दर्शन की समीक्षा –

सत्तास्वरूप, सप्ततत्त्व, कर्मसिद्धान्त, स्यादवाद एवं अनेकान्तवाद का विवेचन

इकाई चार – 15 अंक

जैन आचार मीमांसा

गृहस्थाचार, श्रमणाचार, गुणस्थान, रत्नत्रय एवं मोक्ष–स्वरूप

इकाई पाँच – 15अंक

जैन साहित्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन एवं श्रमण परम्परा

1. समाज, दर्शन, कला एवं शिक्षा आदि की दृष्टि से जैन साहित्य का मूल्यांकन –7.5 अंक
2. तीर्थंकर ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर का जीवन दर्शन तथा समन्तभद्र, अकलंक, प्रभाचन्द्र, हेमचन्द्र, यशोविजय आदि दार्शनिक आचार्यों के अवदान –7.5 अंक

सहायक पुस्तकें :–

1. सन्मतिसूत्र (हिन्दी अनुवाद) – सम्पा. डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री
2. समणसुत्तं, आचार्य विनोवाभावे–प्रकाशक सर्व सेवा संघ, वाराणसी
3. दशवैकालिक – एक समीक्षात्मक अध्ययन–मुनि नथमल
21. तत्त्वार्थसूत्र, सम्पादक – पं. सुखलाल संघवी
22. जैन दर्शन, पं. महेन्द्र कुमार जैन
23. जैन धर्म–दर्शन – डॉ. मोहनलाल मेहता
24. जैन दर्शन : मनन और मीमांसा – मुनि नथमल
25. स्टडीज इन जैन फिलासफी – डॉ. नथमल टाटिया
26. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
27. कुवलयमाला कहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
28. ए क्रिटिकल स्टडीज आफ पउमचरियं – डॉ. के. आर. चन्द्रा
29. स्टडीज इन भगवतीसूत्र – डॉ. जे. सी. सिकदर
30. जैन–आचार : सिद्धान्त और स्वरूप – देवेन्द्र मुनि
31. परमात्मा प्रकाश एवं योगसार –सम्पा. डॉ. उपाध्ये
32. जैनधर्म – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर

33. जैनधर्म के प्रभावक आचार्य – साध्वी संघमित्रा
34. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा– डॉ0 नेमिचन्द शास्त्री
35. जैन दर्शन में आत्मविचार – डॉ. लालचन्द्र जैन
36. जैन धर्म के सम्प्रदाय – डॉ. सुरेश सिसोदिया
37. जैन दर्शन के प्रभावशाली आचार्य, देवेन्द्र मुनि
38. दशवैकालिक – आचार्य तुलसी एवं मुनि नथमल
39. जैन तत्त्वविद्या – मुनि प्रमाण सागर
40. जैन, बौद्ध एवं गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन– डॉ0 सागरमल जैन
41. समणसुत्तं चयनिका – प्रो. के सी. सोगानी